IIM
JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

हिंदी पत्रिका

त्रिकुटा

आत्मदीप: भव

संपादकीय समिति (भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू)
डॉ. अनुजा अखौरी, सहायक प्रोफेसर
डॉ. बिजॉय रक्षित, सहायक प्रोफेसर
शालिन एस. नायर, प्रशासनिक अधिकारी जन-सम्पर्क एवं प्रशासन
आशीष कुमार ईशर, राजभाषा अधिकारी

संकलन समिति
आशीष कुमार ईशर, शलिन सशिधरन नायर

प्रतिलिप्यधिकार
भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
सर्वाधिकार सुरक्षित
इस पुस्तक की किसी भी सामग्री, कविता, लेख, आलेख आदि को कॉपीराइट स्वामी की बिना लिखित अनुमति के किसी भी रूप में जैसे फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, जेटोग्राफी या अन्य किसी रूप में किसी भी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलेक्ट्रॉनिक या मेकैनिकल रूप में शामिल कर पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।

मूल रूप से भारत में प्रकाशित
पुस्तक : पत्रिका

© भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
संस्करण: चतुर्थ
वर्ष: 2025

प्रकाशक: भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

पुस्तक डिजाइन एवं मुद्रकः
सिग्नस एडवरटाइजिंग (इंडिया) प्रा. लि. बंगाल इको इंटेलिजेंट पार्क, टावर-1, 13वां तल, यूनिट 29,
ब्लॉक ईएम-3, सेक्टर-V, साल्टलेक, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700091

त्रिकुटा
“आत्मदीप: भव”

हमारे संस्थान की हिन्दी पत्रिका ‘त्रिकुटा’ की चतुर्थ संस्करण को प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

पत्रिका के नाम के चयन के लिए संस्थान के सभी सदस्यों से सुझाव आमंत्रित किए गए थे। कुल 50 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, जिनमें से श्री आशीष कुमार ईशर द्वारा सुझाए गए “त्रिकुटा” नाम और टैगलाइन “आत्मदीप: भव” का चयन किया गया। त्रिकुटा पर्वत भारत के जम्मू और कश्मीर राज्य में स्थित है। यह हिमालय पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है और पीर पंजाल रेंज से शिवालिक पहाड़ियों तक फैला हुआ है। कैलाश (6,697 मीटर), शिवलिंग (6,590 मीटर), और मेरु (6,481 मीटर) त्रिकुटा पर्वत की तीन प्रमुख चोटियाँ हैं। पहाड़ ग्लेशियरों का घर हैं, जिसमें मंदाकिनी नदी के स्रोत चोराबारी ग्लेशियर शामिल हैं। त्रिकुटा ब्रह्मा के घर महा मेरु (मेरु पर्वत) के आसपास के बीस पहाड़ों में से एक है। पहाड़ को दिव्य देवी दुर्गा का दसरा घर माना जाता है। वह बुराई को समाप्त करने के लिए तीन देवियों की शक्ति से बनाई गई थी; इसलिए पर्वत को त्रिकुटा कहा जाता है। भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू परिसर त्रिकुटा पहाड़ों की तलहटी में स्थित है। त्रिकुटा पहाड़ों की ऊंचाई भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जो प्रबंधकों और उद्यमियों को विकसित करने की ओर सदैव अग्रसर है। पत्रिका की टैगलाइन ‘आत्मदीप: भव’ का अर्थ है स्वयं अपना प्रकाश बनना।

हम अपने संस्थान के निदेशक प्रो. बिद्या शंकर सहाय जी को सहृदय धन्यवाद देते हैं, जिनके बहुमूल्य सुझाव से पत्रिका का चतुर्थ अंक अभिरूपित हो पाया है। साथ ही हम उन सभी को सविनय आभार व्यक्त करते है जिन्होंने कविता, लेख, कहानी तथा चित्र द्वारा अपने विचारों को पत्रिका के पहले संस्करण में साझा किया है।

यद्यपि पत्रिका के प्रकाशन में हमनें सतर्क ता बरती है, फिर भी अगर कोई त्रुटि रह गयी हो तो हमें खेद है। आपसे अनुरोध है की पत्रिका को और बेहतर बना सके इसके लिए आप अपने सुझाव पाठक और आलोचक, दोनों प्रारूप में हमसे साझा करें (hindipatrika@iimj.ac.in)।

साधुवाद।

सम्पादकीय समिति

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू

अनुक्रमणिका

निदेशक का संदेश	3
अन्वेश (लेख)	4
◆ **कांगड़ा किला: एक ऐतिहासिक धरोहर** - *लखबीर सिंह, कार्यालय सहायक*	4
◆ **धर्म, आडम्बर और विज्ञान** - *लक्ष्मी नारायण जाबड़ोलिया, विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी (डब्ल्यूपी, बैच -02)*	6
◆ **मदन मोहन साहब: एक युग का अनमोल सितारा** - *शलिन सशिधरन नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	10
◆ **राष्ट्र का विकास** - *अभिनव पांडे, एम.बी.ए. (एचएएचएम) 03 बैच*	12
विचार धारा (कविताएँ)	14
◆ **मेरे सपनों का विकसित भारत** - *विजय कुमार मौर्य, विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी*	14
◆ **उठ और फिर चल** - *आशीष कुमार ईशर, राजभाषा अधिकारी*	15
◆ **स्त्रियों का सन्देश मेरी कलम से!!** - *आशीष कुमार, ईएमबीए 03 बैच*	16
◆ **उड़ चला** - *राज आनंद, एम.बी.ए. 07 बैच*	17
◆ **आज तुम्हारे शहर गया था...** - *दीपक आनंद, विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी (डब्ल्यू पी, बैच -03)*	18
◆ **मैं प्रयास कर रहा हूं !** - *मोहम्मद हसीन, कनिष्ठ अभियंता (सिविल), परियोजना विभाग*	19
◆ **भारतीय संस्कृति** - *शलिन सशिधरन नायर, प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन*	20
◆ **मंजिलें** - *मानसी गुप्ता, एम.बी.ए. 09 बैच*	21
◆ **एक बात लिखूं** - *स्वागाटो, एम.बी.ए. 09 बैच*	22
◆ **मैं हिन्दी भाषा हूँ।** -*विजय अनंत कांबले, प्रशासनिक अधिकारी - प्रशासन*	23
◆ **जहाँ सब बोल जाते हैं** -*मोहम्मद हसीन, कनिष्ठ अभियंता (सिविल), परियोजना विभाग*	24
◆ **राजभाषा विभाग: कार्य और उपलब्धियाँ**	25

निदेशक का संदेश

भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), जम्मू, जिसे 2016 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया था, भारत के सबसे युवा आईआईएम में से एक है। हालांकि यह अपेक्षाकृत नया है, लेकिन आईआईएम जम्मू ने अपने अनुसंधान, नवाचार, और परामर्श पर केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से एक प्रमुख व्यावसायिक संस्थान बनने की दिशा में तेजी से प्रगति की है।

आईआईएम जम्मू अब लगभग 1000 छात्रों की संख्या पर पहुंच गया है। संस्थान विभिन्न कार्यक्रम प्रदान करता है, जिनमें एमबीए, आईपीएम, पीएचडी (पूर्णकालिक), पीएचडी (कार्यरत पेशेवरों के लिए), ईएमबीए, और अल्पकालिक प्रमाणन पाठ्यक्रम शामिल हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से, संस्थान उन लीडर का निर्माण कर रहा है जो वैश्विक व्यवसाय की जटिलताओं को समझते हैं।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री के "विकसित भारत" दृष्टिकोण के अनुरूप, आईआईएम जम्मू विकास और उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए समर्पित है। आईआईएम जम्मू ने उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए इनक्यूबेशन और कौशल विकास केंद्र की स्थापना की है। यह केंद्र नवाचारपूर्ण विचारों को पोषित करने और भविष्य के प्रबंधकों को VUCA (वोलैटाइल, अनिश्चित, जटिल, और अस्पष्ट) व्यावसायिक दुनिया में सफलतापूर्वक नेविगेट करने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने का लक्ष्य रखता है।

"**Innovation is the ability to see change as an opportunity – not a threat**." – **Steve Jobs**

आईआईएम जम्मू की इनक्यूबेशन और कौशल विकास पहल इसी सिद्धांत पर आधारित है। यह छात्रों को परिवर्तन को अवसर के रूप में देखने और नवाचार को अपनाने की प्रेरणा देता है।

आईआईएम जम्मू की नालंदा लाइब्रेरी विश्वस्तरीय अवसंरचना और आधुनिक तकनीक से सुसज्जित है। यह पुस्तकालय न केवल छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक ज्ञान का भंडार है, बल्कि एक ऐसा वातावरण भी प्रदान करता है जो सीखने और नवाचार को प्रोत्साहित करता है।

नालंदा लाइब्रेरी छात्रों और शोधकर्ताओं को सशक्त बनाती है कि वे न केवल ज्ञान प्राप्त करें, बल्कि इसे व्यावहारिक रूप से लागू करें।

"**The strength of a nation lies in the unity of its language and culture**."

यह आईआईएम जम्मू की राजभाषा पहल को सार्थकता प्रदान करता है, जो भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ़ करने का प्रयास है। राजभाषा हिंदी का उपयोग न केवल प्रशासनिक दक्षता को सुदृढ़ करता है, बल्कि समावेशिता और राष्ट्रीय गर्व को भी बढ़ावा देता है।

इसके अलावा, आईआईएम जम्मू ने हिंदी पखवाड़ा 2024 का आयोजन किया, जिसमें छात्रों और कर्मचारियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिंदी वाद-विवाद, तात्कालिक भाषण, और कविता पाठ में भाग लिया। यह आयोजन हिंदी के प्रचार-प्रसार और संस्थान के शैक्षणिक और सांस्कृतिक पहलुओं को मजबूत करने की दिशा में एक और कदम है।

इसके अतिरिक्त, आईआईएम जम्मू को टाउन ऑफिशियल लैंग्वेज इम्प्लीमेंटेशन कमिटी, जम्मू द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उनके द्विवार्षिक बैठक के दौरान सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान आईआईएम जम्मू की हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने और इसे प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यों में प्रभावी ढंग से शामिल करने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

इस प्रयास को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए, आईआईएम जम्मू की हिंदी समिति ने इस वर्ष संस्थान की हिंदी पत्रिका का चौथा प्रकाशन किया। यह पत्रिका न केवल हिंदी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहन देती है, बल्कि छात्रों और कर्मचारियों को अपनी रचनात्मकता व्यक्त करने का एक मंच भी प्रदान करती है।

प्रो. विद्या शंकर सहाय
निदेशक

कांगड़ा किला: एक ऐतिहासिक धरोहर

लखबीर सिंह
कार्यालय सहायक

कांगड़ा किला, जिसे "नगरकोट" या "भीमकोट" के नाम से भी जाना जाता है, कांगड़ा शहर से 3 किलोमीटर और धर्मशाला से लगभग 22 किलोमीटर की दूरी पर हिमाचल प्रदेश में स्थित है। यह ऐतिहासिक किला 'बनेर खड्ड' और 'मांझी खड्ड' के संगम पर बना हुआ है और समुद्र तल से लगभग 350 फीट की ऊंचाई पर बना हुआ है। कांगड़ा किला लगभग 4 किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। हिमालय क्षेत्र में सबसे बड़ा और भारत का आठवां सबसे बड़ा किला होने के साथ-साथ, इसे देश का सबसे प्राचीन किला भी माना जाता है।

इस किले का एक रोचक पहलू यह है कि इसकी स्थापना एक पौराणिक कथा से जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि यह किला 'राक्षस जलंधर' के कान पर स्थित है, जिसे भगवान शिव ने मारा था और जो यहां एक पहाड़ के नीचे दफन किया गया था। इसलिए इसे 'कानगढ़' भी कहा जाता है, जो बाद में कांगड़ा के नाम से जाना जाने लगा।

इस किले का इतिहास लगभग 3,500 साल पुराना है और इसे कई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षी माना जाता है। इतिहास के पन्नों में कांगड़ा किले का सबसे पहला उल्लेख सिकंदर महान के युद्ध अभिलेखों में मिलता है। माना जाता है कि इस किले का निर्माण त्रिगर्त साम्राज्य के कटोच राजपूत वंश के 234वें राजा सुशर्मा चंद्र ने करवाया था, जिन्होंने महाभारत युद्ध में कौरवों का साथ दिया था। त्रिगर्त साम्राज्य, जो प्राचीन भारत का एक महत्वपूर्ण राज्य था, बाद में कांगड़ा के नाम से जाना जाने लगा।

प्राचीन काल में यह किला सोने, चांदी और कीमती रत्नों से भरे खजाने के लिए प्रसिद्ध था। यही कारण था कि कई आक्रमणकारियों की नज़र इस किले पर रही। इसके अलावा, कांगड़ा किले के बारे में कहा जाता है, "जो इस किले पर अधिकार करेगा, वह पहाड़ों पर शासन करेगा।" जिस कारण इस किले पर अब तक 52 बार आक्रमण किए जा चुके हैं। पहला आक्रमण 470 ईस्वी में कश्मीर के राजा श्रेष्ठ सेन द्वारा किया गया था, और इसके बाद 1009 ईस्वी में महमूद गजनवी ने यहां भारी लूटपाट की। इसके बाद मुहम्मद तुगलक (1337 ईस्वी), फिरोज शाह तुगलक (1357 ईस्वी), शेर शाह सूरी (1540 ईस्वी), और

मुगल बादशाह अकबर (1571 ईस्वी) ने भी किले पर आक्रमण किए, लेकिन इसे जीतने में असफल रहे।

1620 ईस्वी में मुगल बादशाह जहांगीर ने अंततः किले पर विजय प्राप्त की। इसके बाद 1786 ईस्वी में कांगड़ा के महाराजा संसार चंद कटोच ने किले पर अपना कब्जा किया। 1809 ईस्वी में गोरखाओं के खिलाफ संधि के तहत महाराजा संसार चंद कटोच ने यह किला सिख साम्राज्य के संस्थापक महाराजा रणजीत सिंह को सौंप दिया। 1846 ईस्वी में सिखों की हार के बाद किला ब्रिटिश शासन के अधीन चला गया। 1905 ईस्वी में आए भूकंप के कारण किले का अधिकांश हिस्सा ध्वस्त हो गया, जिसके बाद अंग्रेजों ने इस किले को छोड़ दिया। लेकिन इसके अवशेष आज भी इसके गौरवशाली इतिहास की गवाही देते हैं।

ऐसा माना जाता है कि कांगड़ा किले में 21 कुएं खजाने से भरे हुए हैं, जिनकी गहराई लगभग 4 मीटर और चौड़ाई 2.5 मीटर है। यह कुएं राजाओं द्वारा अपने खजाने को सुरक्षित रखने के लिए बनाए गए थे। हालांकि इनमें से कुछ कुएं आक्रमणकारियों और विदेशी शक्तियों द्वारा लूटे गए थे। कहा जाता है कि महमूद गजनवी ने इनमें से 8 कुओं को लूटा था, और 5 कुएं ब्रिटिशों द्वारा खाली किए गए थे। शेष 8 कुएं अब भी खजाने से भरे हुए माने जाते हैं, जिन्हें न तो खोजा जा सका है और न ही उनसे कोई खजाना निकाला गया है।

कांगड़ा किला अपने भव्य वास्तुशिल्प और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। किले की दीवारें 4 किलोमीटर लंबी हैं। इसके अलावा, किले के परिसर में कई मंदिर हैं, जिनमें माता अंबिका देवी, श्री लक्ष्मी नारायण और भगवान महावीर के पत्थर से उकेरे गए मंदिर प्रमुख हैं। ये मंदिर वास्तुकला की उत्कृष्टता और धार्मिक महत्व के अद्भुत उदाहरण हैं। माता अंबिका देवी कांगड़ा के शासकों की कुलदेवी मानी जाती है।

कांगड़ा किले को आज भी पुरातत्वविद और इतिहासकार एक महत्वपूर्ण स्थल मानते हैं, जहां से प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति की झलक मिलती है। इसलिए कांगड़ा किले को राष्ट्रीय महत्त्व का स्मारक घोषित किया गया है और यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के संरक्षण में है।

कांगड़ा किला न केवल हिमाचल प्रदेश का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, बल्कि यह भारत के गौरवशाली इतिहास का प्रतीक भी है। यहां आने वाले पर्यटक इसकी भव्यता और ऐतिहासिकता से प्रभावित होते हैं, और इसे देखकर भारत के प्राचीन इतिहास की झलक पा सकते हैं।

धर्म, आडम्बर और विज्ञान

लक्ष्मी नारायण जाबड़ोलिया
विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी (डब्ल्यूपी, बैच -02)

धर्म का भारत की संस्कृति में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस देश में धर्म का अस्तित्व तब से है जब से देश की सभ्यता और समाज का अस्तित्व है। भारतीयों का एक विशाल बहुमत स्वयं को किसी न किसी धर्म से संबंधित अवश्य बताता है। भारत एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता और धार्मिक सहिष्णुता को कानून तथा समाज, दोनों द्वारा मान्यता प्रदान की गयी है। भारत के संविधान में राष्ट्र को एक पंथनिरपेक्ष गणतंत्र घोषित किया गया है। आजकल चुवानी माहौल में भी राजनैतिक पार्टियाँ सत्ता हासिल करने के लिए बढ़ चढ़ कर धर्म की बातें करती है, धर्म प्रत्यक्ष रुप से अपने को आस्था से जोड़ता है। धर्म के नाम पर आप जनता को किसी की दिशा में मोड़ सकते हो, इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आजकल जनता कि सोच यही है कि जो धर्म की बात करेगा वो जनता का राजा होगा। लेकिन आजकल जो हम लोग देख रहे है क्या वास्तव में वो धर्म है? शायद नहीं।

धर्म

धर्म का वास्तविक अर्थ होता है, धारण, अर्थात जिसे धारण किया जा सके। धर्म, कर्म प्रधान है, गुणों को जो प्रदर्शित करे वह धर्म है। धर्म को गुण भी कह सकते हैं। यहाँ उल्लेखनीय है कि धर्म शब्द में गुण अर्थ केवल मानव से संबंधित नहीं, पदार्थ के लिए भी धर्म शब्द प्रयुक्त होता है यथा पानी का धर्म है बहना, अग्नि का धर्म है जलना आदि। व्यापकता के दृष्टिकोण से धर्म को गुण कहना सजीव, निर्जीव दोनों के अर्थ में नितांत ही उपयुक्त है। धर्म सार्वभौमिक होता है। पदार्थ हो या मानव, पूरी पृथ्वी के किसी भी कोने में बैठे मानव या पदार्थ का धर्म एक ही होता है। उसके देश, रंग रूप की कोई बाधा नहीं है। धर्म सार्वकालिक होता है यानी कि प्रत्येक काल में युग में धर्म का स्वरूप वही रहता है। धर्म का अर्थ जब गुण और जीवन में धारण करने योग्य होता है तो वह प्रत्येक मानव के लिए समान होना चाहिए। जब पदार्थ का धर्म सार्वभौमिक है तो मानव जाति के लिए भी तो इसकी सार्वभौमिकता होनी चाहिए। अतः मानव के सन्दर्भ में धर्म की बात करें तो वह केवल मानव धर्म है।

गौतम ऋषि कहते हैं -'यतो अभ्युदयनिश्रेयस सिद्धिः स धर्म।' (जिस काम के करने से अभ्युदय और निश्रेयस की सिद्धि हो वह धर्म है)। मनु ने मानव धर्म के दस लक्षण बताये हैं:- "धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम्॥" (धैर्य, क्षमा, दम (अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (अन्तरंग और बाह्य शुचिता), इन्द्रिय निग्रहः (इन्द्रियों को वश मे रखना), धी (बुद्धिमत्ता का प्रयोग), विद्या (अधिक से अधिक ज्ञान की पिपासा), सत्य (मन वचन कर्म से सत्य का पालन) और अक्रोध (क्रोध न करना); ये दस मानव धर्म के लक्षण हैं।) जो अपने अनुकूल न हो वैसा व्यवहार दूसरे के साथ नहीं करना चाहिये - यह धर्म की कसौटी है। महाभारत में कहा है- जो पुरुष धर्म का नाश करता है, उसी का नाश धर्म कर देता है और जो धर्म की रक्षा करता है, उसकी धर्म भी रक्षा करता है। रामायण में भी बताया गया है कि – "परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम अधम नहीं भाई" (यानि किसी को सुख देने से बड़ा कोई धर्म नहीं है और किसी को दुःख देने से बड़ा कोई अधर्म नहीं है)। "एक तरह से हम देखे तो रामायण सिद्धांत (प्रिंसिपल्स) पर आधारित है जबकि महाभारत में नीति (रुल्स) पर जोर दिया है।

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के अनुसार: "धर्म मुख्य रूप से केवल सिद्धांतों का विषय होना चाहिए। यह नियमों का मामला नहीं हो सकता। जिस समय यह नियमों में ढल जाता है, यह एक धर्म के रूप में बंद हो जाता है, क्योंकि यह जिम्मेदारी को मार देता है, जो सच्चे धार्मिक कृत्य का एक अंश है।" स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि "सच्चा धर्म सकारात्मक होता है, नकारात्मक नहीं। अशुभ एवं असत से केवल बचे रहना ही धर्म नहीं है। वास्तव में शुभ एवं सत्कार्यों को करते रहना ही धर्म है।"

आजकल हम लोग जो धर्म के बारे में देख रहे है उनको धर्म न होकर सम्प्रदाय या समुदाय मात्र कहे तो ज्यादा सठीक रहेगा, क्यों कि अपने मानव धर्म के मूल से भटक कर आजकल सब अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने में लगे हुए है और मतों के आधार पर निर्धारित है, जबकि धर्म का मूल तो एक ही है, अहिंसा और सत्य। अहिंसा का तात्पर्य मनसा, वाचा, कर्मणा में हिंसा नहीं होना और सत्य का मतलब ब्रह्म (Fundamental Truth) से है जो जिसको आज विज्ञान भी कई प्रयोगों से खोज रही है जैसे बिंग बैंग थ्योरी या गॉड पार्टिकल आदि और विज्ञान ने भी एक पावर को माना है और वो है गुरुत्वाकर्षण फ़ोर्स या केन्द्रियबल जो कि वस्तु की घूर्णन से मिलता है। "सम्प्रदाय" एक परम्परा के मानने वालों का समूह है। धर्म तो मानव जाति के लिए होता है। धीरज से विचार करें तो समझ आयेगा कि धर्म तो एक ही है परमात्मा भी एक ही है। आत्मा में भिन्नता हो सकती है परन्तु यह भिन्नता हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि कोई मान बैठा है तो वह असल में धर्म नहीं जानता क्योंकि धर्म कुछ लोगों के लिए हो ही नहीं सकता वह तो समस्त मानव जाति के लिए समान है,चूंकि मानव एक सामाजिक प्राणी है ऐसा माना जाता है कि धर्म इंसान को अच्छाई के मार्ग पर लेकर जाता है। साधारण शब्दों में धर्म के बहुत से अर्थ

हैं जिनका मूल हैं- कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सदाचरण, सद्-गुण आदि। जबकि "सम्प्रदाय" एक परम्परा के मानने वालों का समूह है, और वो मतों पर आधारित अपने अलग सिद्धांतों और नियमों को प्रगाढ़ता से जोर देते है।

कबीर, रैदास और साईं ऐसे उदाहरण हैं जो यह भाव त्याग चुके थे असल में वे धर्म को समझते थे, जिसका नतीजा यह कि वे हर एक व्यक्ति को केवल मनुष्य समझते थे, सिद्धार्थ ने स्वयं को बुद्ध कहा, जो सजग है, जो जानता है, और जो विशेषण है, एक गुण है। वो जानते थे कि लोग एक सीमित सम्प्रदाय बना लेंगे जबकि धर्म तो सबका है, अतः उन्होंने स्वयं को गौतमबुद्ध कहा जो कि कोई भी मनुष्य बन सकता है।

किसी देवता ने कभी भी सम्प्रदाय विशेष जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया, कृष्ण ने केवल धर्म शब्द का प्रयोग किया जब कभी सुना "*यदा यदा हि धर्मस्य*" ही सुना। पवित्र कुरान के अनुसार "सारे मनुष्यों का धर्म एक ही था, बाद मे उनमें विभेद हुआ"। ईसाई भी एक ही ईश्वर में विश्वास रखते हैं उसे सृष्टि का रचयिता व पालक मानते हैं यह भी बाकियों से पृथक नहीं। जीसस क्राइस्ट को परमात्मा स्वरूप कहा गया है और दयालु बताया है, जो एक गुण को दर्शाता है। वेदों में भी परमपिता ईश्वर को फंडामेंटल सत्य का प्राथमिक स्रोत बताया है, कण - कण में भगवान है, नर से नारायण बना है, आत्मा सो परमात्मा कहा गया है, जैसे कि तुम स्वयं ही दीप हो, ईश्वर सच्चिदानंद स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वांतर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है, इसमें भी उनके गुणों को ही दर्शाया गया है। जैन या सिख प्रवर्तकों ने भी धर्म को मानव के लिए बताया और मानव कल्याण को ही सर्वोपरि माना है।

अगर मैं राष्ट्र धर्म की बात करु तो भारतीय संविधान में निहित मौलिक अधिकार और कृतव्य पर जोर दिया जाता है, एक वैज्ञानिक सोच अपनाते हुए मानव कल्याण की सोच रखता है, एक प्रसिद्ध न्यायाधीश ने कहा था कि संविधान को पढ़ने के बाद किसी भी धर्म ग्रन्थ पढ़ने की जरूरत नहीं है, उसमे सभी धर्म ग्रंथों का मूल छुपा हुआ है। मतलब धर्म या धर्म ग्रंथों के मूल को देखे तो गुण उभर कर सामने आते है, गुणों पर विशेष जोर दिया गया है भगवान को भी गुणों के रूप में ही परिभाषित किया गया है और वो मानव सेवा का परम संदेश देता है।

आडम्बर

आजकल प्रायः धर्म के दो रूप दिखाई देते है एक आस्था और दुसरा आडम्बर। प्रथमदृष्टया ये दोनो रूप परस्पर विलोम लगते है पर वास्तविक सत्य ये है कि आडम्बर का अस्तित्व बिना आस्था के सम्भव ही नही है या कहें कि आस्था ही आडम्बर की जननी है। ये सार्वभौमिक सत्य है कि इस संसार को चलाने वाली एक अलौकिक शक्ति है फिर चाहे आप उसे किसी भी नाम से पुकारे चाहे प्रकृति बोलो या भगवान या ईश्वर या अन्य कोई आदि। उस शक्ति में आपकी आस्था का माध्यम भी, आध्यात्म-विज्ञान, ज्ञानमार्गी-प्रेममार्गी, सगुण-निर्गुण, निराकार-साकार आदि कुछ भी हो सकता है। आस्था और आडम्बर का ये एक ऐसा द्वन्द है जिसमें तर्क और तथ्यो की तो जैसे कोई भूमिका ही नही रही है और जहां तर्क समाप्त हो जाये, वहां आडम्बर शुरू हो जाते है, आस्था दृढ़ हो ये आवश्यक है पर अंध कदापि नही। आस्था किसी में भी हो सकती है विज्ञान के प्रयोग भी आस्था से ही सिद्ध किये जाते है कोई भी रिसर्च करने के लिए पहले एक हाइपोथिसिस बनाना पड़ता है, देखा जाये तो आस्था के बिना कोई भी नहीं है, ये कहना भी उचित रहेगा की इस दुनिया में नास्तिक कोई नहीं है, केवल ईश्वर में आस्था न रखना ही नास्तिक नहीं है, बल्कि जिसकी कोई भी किसी भी प्रकार की कोई आस्था नहीं हो, वो नास्तिक है।

यजुर्वेद में भी कहा गया है- 'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महाद्यशः। अर्थात ईश्वर को किसी प्रतिमा तक सीमित नही रखा गया है। उस परमात्मा के स्वरूप का वर्णन ज्ञानीजन ही कर सकते हैं। बुद्धि में धारण करने पर ही वह परमात्मा सुशोभित होता है। जो उस परमात्मा के तीन पद (तीन स्वरुप-सत्, चित्, आनन्द) को धारण करता है वह पालकों का भी पालक होता है। अतःआत्मा सो परमात्मा कहा गया है। ऐसे ही कुरान शरीफ़ के अनुसार एक ही परमात्मा की इबादत के लिए कहा गया है। फिर भी हम तरह तरह की प्रतिमा गढ़ लेते हैं। गली गली में विभिन्न प्रकार की प्रतिमा गढ़ कर भगवान को उसमें सीमित कर दिया। ऐसा भी कहा जाता है कि 18 वी सदी में देवताओ की प्रतिमातकम चित्रण किया गया था और आजकल वो हर घर में विधमान है, उन्ही में ईश्वर नजर आते है। मुझे एक कहानी याद रही है जिसमे बच्चा ईश्वर को केवल बकरे के रूप में ही स्वीकार करता है क्यों कि उसको बताया गया था कि ईश्वर बकरे के रूप में है जोकि कण कण में भगवान को सार्थक करता है। सभी धर्म ग्रंथों में भगवान को कहीं न कहीं एक शक्ति के रूप में प्रदर्शित किया गया लेकिन मूल रूप से उसके गुणों को दर्शाया है जैसे पालन कर्ता, दयालु, परम शक्ति आदि, ऐसा ही यदि मैं प्रकृति (Nature) की बात करु तो वो भी भगवान के रूप में सठीक बैठती है बेशक एक परम शक्ति है और न केवल मनुष्य बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि की पालन कर्ता है, कुछ महान लोग प्रकृति को ही भगवान मानते है उसमे उनकी प्रगाढ़ आस्था भी है, चिपको आंदोलन इसी का उदाहरण है और मेरे अनुसार सही भी है।

आजकल धर्म आडम्बर कि गिरफ्त में फंसता जा रहा है। वास्तविकता से दूर कहीं छद्मता का आवरण ओढ़े खड़ा है। देश में आज धर्मस्थलों की संख्या शिक्षण संस्थानों व चिकित्सा संस्थानों, अस्पतालों की संख्या से कई गुना अधिक है। इतना ही नही, देश की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा भाग कहीं न कहीं इस आस्था के बाजार से जुड़ा हुआ है। परम्परावादी धार्मिक मान्यताओं, धार्मिक उत्सवों, धर्मस्थलों आदि को दरकिनार करते हुए पिछले कुछ वर्षों में नए-नए धर्मगुरुओं, महंतों, बाबाओं, साधु-साध्वियों ने ईश्वरीय सत्ता के समानांतर या ईश्वर प्राप्ति के स्वघोषित मार्ग बनकर या खुद को ही ईश्वर घोषित कर इस आस्था के बाजार को अधोगति की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया। आधुनिक युग में आम आदमी का जीवनशैली विलासिता एवं भौतिक सुख-सुविधा की ओर मुड़ गयी है इसी दुविधापूर्ण स्थिति का पूरा फायदा उठाते हुए आस्था के कारोबारियों ने किसी को जीवन की दौड़ में शॉर्टकट सफलता दिलाने के नाम पर तो, किसी सफल को उसके पापबोध का अहसास कराकर दान, सहयोग आदि के बहाने अपनी दुकान चमकाए रखी। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में आज पारम्परिक धर्मों से परे लगभग उतने ही पाखंड और प्रपंचनुमां धार्मिक आडम्बरों की एक बड़ी दुनिया रच डाली गई है।

धर्म का कारोबार तथा लोगों की आस्था से खिलवाड़ करने वाले और धर्म की आड़ में गैर-कानूनी कामों में लगे बहुत से संत, बापू, स्वामी, महाराज, श्री-श्री और मौलवी-खादिम हैं जो धड़ल्ले से लोगों को बेवकूफ बनाने और कानून की आँखों में धूल झोंकने में लगे हुए हैं। अफ़सोस की बात यह है कि इसमें से कई न्यूज मीडिया और चैनलों के बनाए और चढ़ाये हुए हैं। इनमें से कई अपने संदिग्ध कारनामों के बावजूद न्यूज चैनलों पर चमक रहे हैं और तमाम विवादों और आलोचनाओं के बावजूद इन बाबाओं पर मीडिया की "कृपा" बरस रही है। चैनलों पर ज्योतिष और दैनिक भाग्य बताने वाले कार्यक्रम सुबह-सवेरे अहर्निश जारी है। न्यूज-चैनलों का काम केवल धंधेबाजी नहीं है बल्कि एक सामाजिक जिम्मेदारी से वो बँधे हुए हैं। मीडिया को इस बात का ख्याल तो रखना ही होगा कि वे जो कुछ भी दिखा रहे हैं उसका समाज पर और देश पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

हरिशंकर परसाई जी अपनी कहानी "ऑइल किंग" में देवताओं की असलियत का पर्दाफाश करते हुए वे लिखते हैं, "हजारों सालों से जो देवता मानकर पूजे जा रहे हैं वे कभी इसी तरह के "ऑइल किंग", "बीड़ी किंग", "मैंगनीज किंग" या "लैदर किंग" होंगे। कभी कोई हम जैसा आदमी किसी "किंग" के यहाँ पहुँच गया होगा और उसने मुँहमाँगा दान कर दिया होगा। बस उस लोलुप विप्र ने बात फैलायी होगी-आहा! वह तो दानी है उसकी पूजा करो। वह देता है।" (परसाई रचनावली: भाग-1, ऑइल किंग) विसंगति को उखाड़ने के लिए विसंगति के सफल प्रयोग का यह एक बेहतरीन उदाहरण है। जो ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती देते हुए धर्मान्ध जनता को एक नया दृष्टिकोण, एक नई चेतना देता है।

मनु-स्मृति में आडम्बर रचने वाले के बारे में कहा गया है कि, अपनी कीर्ति पाने की इच्छा पूर्ति करने के लिये झूठ का आचरण करने वाला, दूसरे के धन को हरण करने वाला, ढोंग रचने वाला, हिंसक प्रवृत्ति वाला तथा सदैव दूसरों को भड़काने वाला 'बिडाल वृत्ति' का कहा जाता है। पुरातन काल से ही भारत में धर्म के नाम पर आडम्बर-प्रदर्शन करने वाले लोग थे और आज भी हैं। वेदों में, शास्त्रों में इनका खंडन भी किया गया है। भारत एक धार्मिक सनातन देश है, धार्मिक आचरण को बहुत ही प्रमुखता दिया गया था। किन्तु यही धार्मिक आचरण आगे चलते-चलते धार्मिक आडम्बर बन गया। विभिन्न प्रकार की सामाजिक कुरुतियां व मन गाडित भ्रांतियां फैला दी गयी जिसकी प्रगाढ़ता आज भी लोगों के खून में बाह दौड़ रही है जिसमें सच मानों तो किसी की भी भलाई नहीं है।

हम लोग धर्म से डरते हैं या हमारे सृष्टिकर्ता भगवान से डर रहे हैं, धर्म के नाम पर अंध-विश्वास के बलि चड रहे हैं। हम यहाँ भूल जाते हैं कि धार्मिक आचरण एक जीवन-कला है, धार्मिक आचरण एक बलि देहि नहीं है। धर्म के आधार पर पवित्र जीवन बिताना चाहिए न कि धर्म में जीवन आहुति चढाना, कोई धार्मिक क्रिया-कर्म नहीं है। यहां तक भी नर बलि से भी परहेज नही कर रहे है जैसे कि कुछ ही रोज़ पहले एक अख़बार के अनुसार, अंध विश्वास के चलते बेटे या भतीजे, स्कूल के बच्चे की बलि चढाने जैसे ख़बरें देखने को मिली थी। जब मनुष्य के व्यक्तित्व में ख़ामियाँ होती हैं, जिसका व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं होता, जो अज्ञानी या अल्प ज्ञानी होता है, जिसको अपने आत्म बल पर विश्वास नहीं होता, जो वास्तविकता को नहीं मानता ऐसे लोग अक्सर आडम्बर या प्रदर्शन-प्रिय बन जाते हैं। अंध-विश्वासों में, अहम भावना में मनुष्य अंधा हो जाता है, अहंकार में लिप्त आडम्बर पूर्ण व्यवहार करने लगता है।

गलत मार्ग, विधि से कमाया धन, सुख पर भी लोग कहते है कि सब भगवान की कृपा दृष्टि है और दिखावे के लिए उसी धन में से कुछ अंश भगवान को अर्पण कर अपने आपको शुद्धिकरण मान बैठते है, यह बात किस हदतक सही ठहराते हैं कौन जाने? ये मनुष्य की बुद्धिशक्ति है?, नहीं ये तो सिर्फ आडम्बर है। इस संदर्भ में कविवर रहीम का एक दोहा याद आता है:- "तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान"। धर्म के नाम पर पाखण्ड करना, धर्म के नाम पर लोगों को फंसाना इन सब में हमारा ईमान बेचा जाता है। आडम्बरपूर्ण जीवन जीने के लिए अनेक कष्ट करने पडते हैं, और वैसे तो वह अनुकरनीय भी नहीं है। धर्म में सरल पवित्र जीवन जीना एक सहज बात है। अगर हम इस बात को जीवन में अपनाते हैं तो कभी भी दूसरों के सामने झुकने का संदर्भ नहीं आता। धर्म मानवता की आत्मा है। ये एक निर्विवाद सत्य है। हाल ही में कुछ लोगों ने धर्म व जाति विहीन (नो कास्ट, नो रिलिजन) प्रमाणपत्र लिया है। असल में उन्होंने वर्तमान पाखंड से विहीन होने के लिए प्रमाणपत्र लिया है।

धर्म और विज्ञान

विज्ञान प्रयोगों पर आधारित क्रमबद्ध ज्ञान है। धर्म के बगैर विज्ञान और विज्ञान के बगैर धर्म अधूरा है। धर्म और विज्ञान एक-दूसरे से जुड़ने के बाद ही पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं। दोनों को एक दूसरे का पूरक कहा जा सकता है और दोनों ही मनुष्य के लिए जरूरी हैं। धर्म मनुष्य को भीतर से सुंदर बनाता है और विज्ञान बाहर से। इस तरह दोनों का विवेकपूर्ण तालमेल मनुष्य को हर प्रकार से सुंदर बना सकता है और मानवता का कल्याण कर सकता है। लेकिन ये भी सत्य है कि इन दोनों का ही अनुचित उपयोग मानव जाति के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है, जिसके प्रमाण आज कल देखने को मिल ही जाते है। धर्म और विज्ञान का समन्वय आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है। कृपया यहां ध्यान दे कि धर्म का अर्थ केवल मानव गुणमात्र से है। मनुष्य के लिए धर्म और विज्ञान दोनों ही अलग-अलग स्तर पर आवश्यक हैं। धर्म और विज्ञान एक-दूसरे को अधिक उपयोगी बनाने में भारी योगदान दे सकते हैं। जितना सहयोग और आदान-प्रदान दोनों के बीच होगा, इनकी उपयोगिता उतनी बढ़ती जाएगी। धर्म और विज्ञान का परस्पर तालमेल जितना भारत में देखने को मिलता है, उतना कहीं और नहीं। सनातन में वर्षों पहले विज्ञान को न केवल धर्म के साथ जोड़ा, बल्कि लोगों को इसके व्यावहारिक ज्ञान के बारे में भी बतलाया। उनका मानना था कि यदि विज्ञान को सुव्यवस्थित ढंग से संवारकर मनुष्य के कल्याण में लगाया जाए तो यह धर्म बन जाता है। जैसे आध्यात्म, मिस्र के पिरामिड्स, हड़पा संस्कृतिकालीन सिविल कोलोनिसशन, आदि।

लेकिन आज कल धर्म की जगह धर्मआडंबर फैल गया है और फर्क इतना भी है कि जहां धर्मआडंबर आ जाता है, वहां विज्ञान की आवश्यकता कम हो जाती है और जहां विज्ञान की मात्रा बढ़ जाती है वहां धर्म पाखंड को उतना स्थान छोड़ना पड़ता है। लेकिन ये बात भी है कि बिना विज्ञान की सहायता, आडंबर का कोई अस्तित्व नही है। चाहे वो जादू हो या आडंबर, विज्ञान की ही देन है, जैसे गायब हो जाना, नारियल से लाल रंग निकलना, धुँआ से

बेहोश कर देना आदि जिसको चमत्कार का नाम भी दिया गया है। आज कल तो प्रायः धर्म पर विज्ञान की सहायता से आडम्बर का मज़बूत नकाब चढ़ा हुआ है। गेलिलियो के टेलिस्कोप आविष्कार के बाद ब्रह्मांड के रहष्य खुलना शुरु हो गया। इस तरह उसने तत्त्वज्ञान और धर्म की एक और अहम धारणा पर वार किया कि सूरज कभी नहीं बदलता और ना ही उसका तेज कम होता है। जरूरी नही कि विज्ञान का अस्तित्व अभी ही आया हो, वो पहले भी होगा तभी तो विश्वअजूबे मौजूद है। और इस विज्ञान का ही धर्मग्रंथों में समावेश किया गया हो। जैसे-जैसे विज्ञान विकास की और अग्रसर हुआ, तथ्यों का राज खुलने लग गया। पहाड़ों को कील की तरह धरती पर ठोक देना, पृथ्वी का किसी सींग या नाग की फन पर टिके रहने आदि सब मिथ्या साबित हुए। न्यूटन ने यदि गुरुत्वाकर्षण बल का सिद्धांत नही दिया होता तो आज भी सेव को जमीन पर गिरना भगवान की देन मानी जाती। "धर्म और विज्ञान" विषय गोष्ठी में वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि संसार मे ज्ञान और विश्वास दो चीजें है। ज्ञान विज्ञान की ओर व विश्वास धर्म की ओर ले जाता है। विज्ञान हम्हे प्रकृति के तथ्यों के बारे में बताता है और ये भी बताता है कब और किस प्रकार उनमें समन्वय बनाना है जिस से कल्याण हो। लेकिन यदि मनुष्य ने विज्ञान का गलत उपयोग किया तो वो हानिकारक सिद्ध हो सकता है इसी प्रकार धर्म मे भी है। वास्तविक धर्म तो यही कहता है। ज्योतिषी भी एक विज्ञान का ही समावेश है जिसमे नव गृह को मान्यता है, हालांकि कालांतर में विज्ञान ने एक गृह को सौर मंडल से बाहर रखा है और पृथ्वी की जगह, सूर्य को स्थिर केन्द्र माना है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक हॉकिंग ने कहा है कि संसार के होने और बनने के किसी सवाल के जवाब के लिए हमें भगवान की शरण में जाने की जरूरत नहीं है। इससे जुड़े हर सवाल का जवाब हमें कुदरत के कायदों से ही मिलने वाला है, यानी फिजिक्स के नियम ही संसार के भगवान हैं। संसार को किसी भगवान ने नहीं बनाया। वह अपने कायदों के तहत खुद-ब-खुद बना है।

धर्म एक जीवनशैली है, जीवन-व्यवहार का कोड जिसमे सत्य और अहिंसा निहित हो चूँकि मानव एक सामाजिक प्राणी है, पहले आदि मानव जंगलों में रहता था, फिर समूह में रहने लगा, मूल बात पर भी कई मत पैदा हुए और विभाजन हुए बाद में मूल आवश्यकता (रोटी कपडा मकान) से ऊपर सोचने लगा और नियति भी बदलने लगी , मूल स्वरूप के ऊपर कई परतें चढ़ने लग गयी धर्म को अलग से ही परिभाषित कर दिया गया और वर्ग विशेष उस मूल के आड़ में खुद को सुप्रीम साबित करना शुरु कर दिए। धर्म के मूल में केवल सुप्रीम पावर के लिए बोला गया है जिसको हर संप्रदाय में अलग अलग नाम दिया गया है और वो बाद में दिया। प्राचीनतम भाषा पालि में भगवान् दो शब्दों से बना है – भग + वान् का अर्थ तृष्णाओं को भंग कर देने वाला, जिसने तृष्णाओं को भंग कर दिया हो वह भगवान् है। मूल "भगवान" शब्द जो की 5 शब्दों से बना है भ मतलब भूमि, ग मतलब गगन, व मतलब वायु, अ मतलब अग्नि और न मतलब नीर और विश्व प्राचीन संस्कृति हड़प्पा में इन सबके साथ साथ में हल, बैल की पूजा होती थी। क्यों कि ये प्रकृति स्वरूप है यानि कि भगवान या ईश्वर कह सकते है यही सृष्टि रचियता व् पालन कर्ता है। और वैज्ञानिक तौर पर भी यही ब्रह्माण्ड के स्वरूप (C,H,O,N,S) है जिसके बिना जीव की उत्पत्ति संभव नहीं है चाहे वो एक कोशीय हो या बहु कोशीय। वास्तविकता में यही होना चाहिए, जो प्रकृति हम्हे जीवन दे रही है उसी की पूजा यानी कि सम्मान करें वो ही ईश्वर तुल्य है और इसी से ही न केवल मानव मात्र बल्कि समस्त प्राणी की जीवन सफल हो पायेगा।

मेरा कहने का मतलब कोई भी धर्म या धम्म या मूल सम्प्रय्दाय वो केवल धारण करना है अर्थात जिसका अनुसरण किया जा सके , यानि की अपनी नियति, अपना व्यव्हार, आचरण ऐसा हो जिसमे धैर्य, क्षमा, पवित्रता, आत्मसंयम, बुद्धि, विद्या, अक्रोध, अहिंसा और सत्य निहित हो (मानव व्याख्या में)। धर्म और विज्ञान हमें दूसरों के प्रति सहिष्णु बनाना सिखाते हैं और इसीलिए धर्म में घृणा और हिंसा का कोई स्थान नहीं है। वैज्ञानिक अपने आविष्कारों का उपयोग मानव मात्रा की भलाई करने के लिए प्रयासरत रहते हैं और यही उनका मूल उद्देश्य भी है। धर्म का उद्देश्य भी मानव जीवन को और अधिक उपयोगी बनाने और मानव जाति की सेवा करना है। इस प्रकार दोनों में कोई अंतर नहीं है। महानतम वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि धर्म को विज्ञान का और विज्ञान को धर्म का पूरक बनना चाहिए। विज्ञान भौतिक पदार्थों का अध्ययन करता तो वहीं विज्ञान चेतना का अध्ययन करता है। धर्म और विज्ञान में परस्पर समन्वय से ही जीव मात्र का कल्याण संभव है। धर्म और विज्ञान का मानव जाति, प्राणी मात्र के लिए उचित उपयोग हो तब ही सार्थक है। विज्ञान कभी धर्म विरोधी नही हो सकता बल्कि आडंबर के विरुद्ध हो सकता है।

मदन मोहन साहब: एक युग का अनमोल सितारा

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

मदन मोहन साहब भारतीय फिल्म संगीत के ऐसे अप्रतिम रचनाकार थे, जिनके सुरों में संवेदनशीलता और गहराई का अनोखा संगम देखने को मिलता है। 25 जून 1924 को बगदाद (इराक) में जन्मे मदन मोहन का पूरा नाम मदन मोहन कोहली था। उनके पिता राय बहादुर चुनीलाल एक प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता थे, और इसी वजह से उनका बचपन कला और सिनेमा के माहौल में बीता।

मदन मोहन ने लखनऊ के प्रतिष्ठित भातखंडे संगीत विद्यालय से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली। उनकी रुचि केवल भारतीय संगीत तक सीमित नहीं थी; वे पाश्चात्य संगीत में भी पारंगत थे। उन्होंने वायलिन, गिटार, और पियानो जैसे पाश्चात्य वाद्य यंत्रों का प्रयोग अपने गीतों में किया, जिससे उनकी रचनाओं को एक अलग पहचान मिली।

फिल्म उद्योग में कदम रखने से पहले, मदन मोहन ने आकाशवाणी लखनऊ में काम किया। इस दौरान उन्हें भारत के कई नामी कलाकारों जैसे बेगम अख्तर और तलबा मेहंदी से सीखने का अवसर मिला। उनकी ग़ज़लों में जो गहराई दिखाई देती है, उसमें आकाशवाणी के अनुभवों का बड़ा योगदान है।

मदन मोहन ने भारतीय सेना में कुछ वर्षों तक सेवा की। उनके अनुशासन और देशभक्ति की भावना ने उनकी रचनाओं में भी झलक पाई। उनकी कई धुनों में वीरता और संवेदनशीलता का अनोखा मिश्रण देखने को मिलता है।

लता मंगेशकर और मदन मोहन की जोड़ी को फिल्म संगीत में अमर माना जाता है। लता जी ने उन्हें "सुरों का जादूगर" कहा। उनके गाए हुए गीत जैसे "लग जा गले", "आपकी नज़रों ने समझा", और "नैना बरसे" आज भी प्रेम और उदासी के प्रतीक माने जाते हैं।

मदन मोहन को हिंदी फिल्म संगीत में ग़ज़लों को नई ऊंचाई तक ले जाने का श्रेय दिया जाता है। उनकी ग़ज़लें भावनाओं की गहराई और संगीत की सूक्ष्मता का बेहतरीन उदाहरण हैं।

» फिल्म 'दिल की राहें' में उनकी ग़ज़ल "रंजिश ही सही" आज भी उर्दू अदब और संगीत प्रेमियों के दिलों में बसी हुई है।

» उन्होंने ग़ज़लों को शास्त्रीयता और आधुनिकता का ऐसा रूप दिया, जो हर पीढ़ी को भाता है।

मदन मोहन की कई धुनें तत्कालीन समय में अस्वीकृत कर दी गई थीं, लेकिन यश चोपड़ा ने 2004 में फिल्म 'वीर-ज़ारा' में उनके अप्रयुक्त धुनों का उपयोग किया। यह साबित करता है कि उनका संगीत कालातीत है।

मदन मोहन साहब ने संगीत में नई ऊंचाईयों को छूने के लिए अनूठे प्रयोग किए।

» 'वो कौन थी?' के गीत "नैना बरसे" में उन्होंने शास्त्रीय संगीत और वेस्टर्न स्ट्रिंग्स का अद्भुत तालमेल किया।

» 'मेरा साया' के गीतों में उन्होंने संतूर और वायलिन का ऐसा प्रयोग किया, जिसने हर गीत को जीवंत कर दिया।

» मदन मोहन ने गायिका सुरैया के साथ भी काम किया, जो उनके शुरुआती करियर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

» वे बहुत अच्छे गायक भी थे और अक्सर अपनी धुनों को खुद गाकर निर्देशकों और निर्माताओं को सुनाते थे।

» उन्होंने गायकों को उनकी सीमा से बाहर जाकर गाने के लिए प्रेरित किया। मोहम्मद रफ़ी से उन्होंने ग़ज़लों में बेहद संवेदनशील गायकी करवाई।

मदन मोहन साहब का उर्दू साहित्य में गहरा झुकाव था। उन्होंने कैफ़ी आज़मी, राजा मेहंदी अली ख़ान, और साहिर लुधियानवी जैसे शायरों के साथ मिलकर कालजयी रचनाएं तैयार कीं।

प्रमुख फिल्में और गीत:

» 'वो कौन थी?' (1964) – "लग जा गले," "नैना बरसे"

» 'मेरा साया' (1966) – "तू जहाँ जहाँ चलेगा"

» 'अनपढ़' (1962) – "आपकी नज़रों ने समझा"

» 'हकीकत' (1964) – "अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों"

» 'वीर-ज़ारा' (2004) – "तेरे लिए," "डूबी डूबी"

मदन मोहन साहब को उनके निधन के बाद उनकी संगीत साधना के लिए कई मंचों पर सम्मानित किया गया। 1975 में उनकी असामयिक मृत्यु ने संगीत जगत को अपूर्णीय क्षति पहुंचाई।

मदन मोहन का संगीत मानवीय भावनाओं का आईना है। उनकी रचनाओं में प्रेम, वेदना, और शांति का ऐसा सम्मिश्रण मिलता है, जो सीधे आत्मा को छूता है। वे केवल एक संगीतकार नहीं, बल्कि संगीत के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को जीवंत करने वाले कलाकार थे। उनके गीत आज भी हर संगीत प्रेमी की धड़कन का हिस्सा हैं।

"मदन मोहन साहब ने सुरों को अमरता दी और संगीत को आत्मा की आवाज़ बना दिया।"

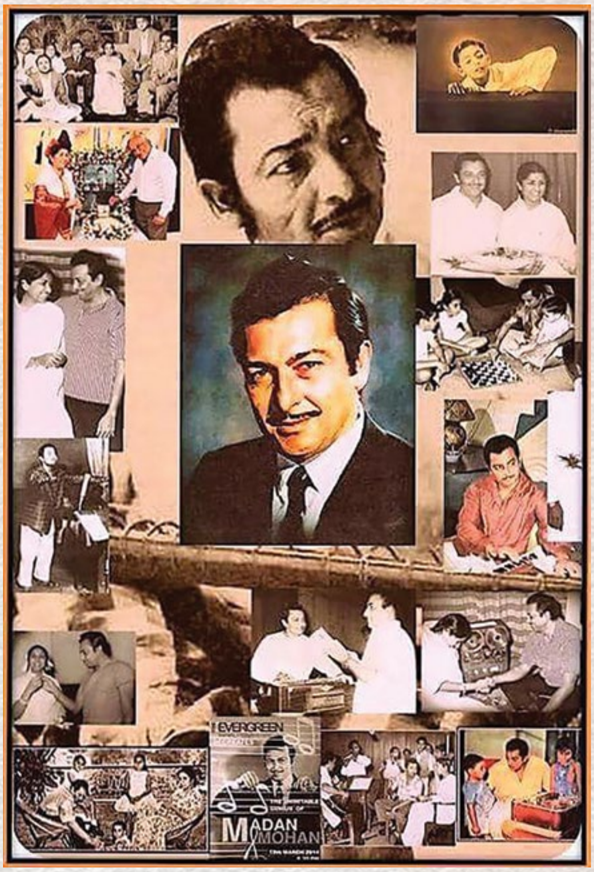

राष्ट्र का विकास

अभिनव पांडे
एम.बी.ए. (एचएएचएम) 03 बैच

किसी भी राष्ट्र के विकास की सच्ची कसौटी उसका साहित्य ही होता है। साहित्य समाज का दर्पण तो होता ही है, साथ ही उसे नवीन ऊर्जा भी प्रदान करता है। सब प्रकार से समृद्ध होने पर भी, साहित्य के अभाव में भाषा रूपवती भिखारिन के समान अनादर की पात्र बन जाती है। साहित्य मानव-जाति के लिए संजीवनी का कार्य करता है। यह नव निर्माण और पुनर्निर्माण दोनों करता है। यह नियामक और निर्णायक दोनों भूमिकाएँ निभाता है।

साहित्य में मनोभावों का प्राधान्य होने से इसका वास्तविक स्वरूप वैश्विक हो जाता है। यह सही है कि साहित्य आदेशात्मक या दंडात्मक भूमिका तो नहीं निभाता, लेकिन इसकी प्रभावात्मक क्षमता प्रच्छन्न और परोक्ष रूप से अत्यधिक प्रबल होती है।

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध होता है। एक ओर साहित्य का हित और सहृदय भाव समाज के लिए कल्याणकारी होता है, तो दूसरी ओर समाज का पारंपरिक आचरण साहित्य को शास्त्र की गरिमा प्रदान करता है।

साहित्य को तात्कालिक सामाजिक संक्रमण प्रभावित तो करते हैं, लेकिन सर्जक जो समय और शास्त्र दोनों का ज्ञाता और द्दष्टा होता है, वह हंस के नीर-क्षीर विवेक की भांति सांस्कृतिक और असांस्कृतिक में से सांस्कृतिक को चुनता है और शब्द के बल पर समाज को नई दिशा देता है।

साहित्य की विषय-वस्तु समाज है। जैसा समाज और उसका वातावरण होगा, वैसा ही प्रभाव साहित्य पर पड़ेगा। साहित्यकार भी उसी समाज में रहते हुए समाज के सुख-दुख, रीति-रिवाजों, और कल्पनाशीलता को यथार्थ की कसौटी पर परखता है। साहित्य का समाज पर क्रांतिकारी प्रभाव पड़ता है। साहित्यकार समाज का प्रतिनिधित्व करता है और उसे उच्च विचारों के साथ दिशा प्रदान करता है।

जब समाज किसी बुराई की चपेट में आता है, तो साहित्यकार उसे दूर करने का अथक प्रयास करता है। साहित्यकारों ने हमेशा ही समाज को सही राह दिखाने का काम किया है। नकारात्मकता को बढ़ावा देना, केवल स्वार्थ सिद्ध करना सर्वथा अनुचित और निंदनीय है।

ऐसा साहित्य, जो समाज को सही दिशा में प्रेरित न कर सके, आदर्शों और मर्यादाओं की स्थापना न कर सके, और जो केवल विनाश की चिंगारी उत्पन्न करे, वह साहित्य कहलाने के योग्य नहीं है। जिस प्रकार जीवन में समन्वय और सामंजस्य आवश्यक है, उसी प्रकार साहित्य में लोकमंगल और लोकरंजन की भावना आवश्यक है।

समाज और साहित्य का गहरा संबंध है, और दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। समाज शरीर है, तो साहित्य आत्मा। साहित्य मानव मस्तिष्क से उत्पन्न होता है और मनुष्य को मानवता प्रदान करता है। मनुष्य न तो समाज से अलग हो सकता है, न साहित्य से।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य और संस्कृति का संरक्षण करना समय की आवश्यकता बन गया है। युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति से विमुख हो रही है और उनका रुझान पाश्चात्य सभ्यता की ओर बढ़ रहा है, जो चिंताजनक है। अच्छा साहित्य समाज में सकारात्मक सोच उत्पन्न करता है, जिससे स्वच्छ समाज का निर्माण संभव होता है।

वर्तमान साहित्य मानव को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प लेकर चल रहा है। इसमें व्यापक मानवीय और राष्ट्रीय हित निहित हैं। साहित्यकारों में राष्ट्रीय स्तर पर हित और भयावहता में अंतर करने की क्षमता के साथ द्दष्टि की स्पष्टता भी जगी है।

मेरे सपनों का विकसित भारत

विजय कुमार मौर्य
विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी

मिट्टी की सौंधी खुशबू, सपनों की आस,
हवा में समाहित है, एक नया विश्वास।
भारत की धरती पर उठती कोपल उम्मीदें,
विकसित भारत के सपने की साखा ना टूटे।

सुबह की किरणें, उजालों की बातें,
राष्ट्र की तरक्की की सुनहरी सौगातें।
कृषि, विज्ञान, और शिक्षा का संगम,
सपनों के भारत को रचते हर रंगम।

सड़कें हो चौड़ी, अंबर तक जाये,
तकनीकी की उचाईया, तारो सी झिलमिलाये ।
सहराओं से शहरों तक फैलती ये रेखाएँ,
समृद्धि की ओर बढ़ती, अनगिनत परिभाषाएँ।

स्वास्थ्य, सुरक्षा और शिक्षा की चादर,
हर भारतीय को मिले, ये अधिकार का आदर।
नारी शक्ति, युवा संकल्प का रंग,
हर दिशा में चमकता रहे, अन्नदाता के संग ।

भ्रष्टाचार की धूल से जब साफ होगी धरती,
सपनों के दर्पण मे तब उभरेगी माँ भारती ।
अधिकारी और नागरिक, सबकी हो जिम्मेदारी,
विकसित भारत की राह पर चले भले हो मजबूरी।

हर गांव, हर शहर, हर छोटी बड़ी बात,
आर्थिक उन्नति की हो, हर दिल में बात।
मूल्यों की नींव पर खड़ा ये भारत,
सपनों के शिखर को छूए इरादत।

अनेक होकर, एक हो जाये।
बिखरे सुर मिलकर गीत हो जाये ॥
अनेक राहे मिलकर एक हो जाये।
विकसित भारत की मंजिल तक जाये ॥

हम सभी मिलकर, एक आवाज बनाएं,
विकसित भारत के सपने को सच कर जाएं।
आओ हम सब, एक नई दिशा में चलें,
सपनों का भारत, सच में हमें प्यारा लगे।

जय हिन्द , जय भारत !

उठ और फिर चल

आशीष कुमार ईशर
राजभाषा अधिकारी

छल के साए में टूटा,
मन का दीपक जो था जला।
डरा हुआ, मगर हार न मानी,
आंधियों से भी मन झुलसा।

गया जल, हर अरमान राख हुआ,
फिर भी दिल ने सपनों को देखा।
धुएं से बाहर, रोशनी को खोजता,
अपने कल की ओर कदम बढ़ाता।

हल ढूंढता, कठिन राहों में,
हर पत्थर को उठाकर देखता।
जख्मों को मरहम बना लिया,
अपनी ताकत को पहचानता।

सरल सा जीवन, सुकून से भरा,
हर गम को सीने में दफना लिया।
अब ना छल, ना जल की परवाह,
बस उम्मीदों से रोशन है हर राह।

कल का सूरज चमक रहा,
खुद के आसमान को रंग रहा।
उठ, ये वक्त है फिर से चलने का,
हर दर्द को खुशी में बदलने का।

"उठ और फिर चल," कहता है दिल,
संघर्ष की आग से गढ़ता है खिल।
यह कहानी तेरी जीत की बनेगी,
जो जलेगा, वही उजाले करेगी।

स्त्रियों का सन्देश मेरी कलम से!!

आशीष कुमार
ईएमबीए 03 बैच

स्त्रियां भटकती रही है यहाँ,
अपने अक्स की तलाश में।
तोड़ दे गुरूर अब पुरुषों का,
उठा के सर को आकाश में।

तेरा सर भी कट जाएगा,
तो रह जायेगी फिर वहीँ पे बात,
उठा सिर्फ सर अपना तू,
अस्तित्व से अपने कर आघात।

ना डरा सके कोई अब तुझे,
मूक नहीं रहना है अब तुझे,
संवाद अब तेरा आकाश से है,
सूर्य के अस्थिर प्रकाश से है।

अपवाद नहीं बनना है बस तुझे,
मूक उद्घोष करना है अब तुझे,
आहुति देनी पड़ सकती है,
प्रह्लाद जैसा बनना है अब तुझे।
मिटा दे अब ये भ्रम भी तू
पहचान खुद की नहीं है तेरी,

तेरा वजूद उनके होने से है,
जीवन दिया है तूने उनको,
उनका उद्‌भव तेरे होने से है।

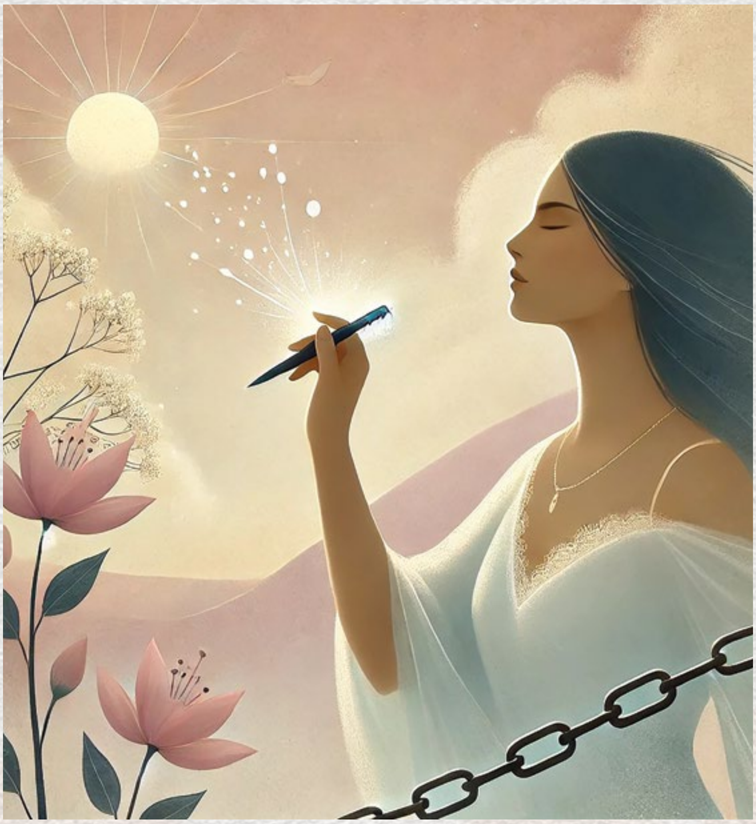

उड़ चला

राज आनंद
एम.बी.ए. 07 बैच

फिर कागा निकल गया,
नए शहर को अपना बनाने,
कंधों पर बस्ता लिए
उम्मीद, हौसला और प्यार लिए,
उड़ गया पंछी अपने आशियाने से।

नए पड़ाव में आ पहुंचा हूँ,
कल से नींद अब खुद खुले जाएगी।
शहर की विरानीयों को दूर करने के लिए,
कल से फिर खुद की चाय बनाई जाएगी।

नए शहर, नए पड़ाव में,
सुकून से ज़्यादा शोर हो जाएगा।
अब गरम खाने की फुर्सत कहाँ,
पुराने के साथ अब नए मसले में उलझा रहूँगा।

घर को सँवारना भी है,
नई ज़िम्मेदारियों को भी संभालना है,
खुद के लिये सुकून भी निकालना है।
सबको सबका वक़्त भी देना है,
इन सबका हिसाब लगाए,
आज फिर, उड़ गया पंछी अपने आशियाने से।

आज तुम्हारे शहर गया था...

दीपक आनंद
विद्यावाचस्पति शोध विद्यार्थी (डब्ल्यू पी, बैच -03)

आज तुम्हारे शहर गया था,
कुछ यादें, कुछ सपने और कुछ वादे संग साथ ले गया था।

मानो वक्त ठहर सा गया था,
कुछ अनकही बातें जैसे बिखर सा गया था।

बातें प्यार की, बातें वो पहली मुलाकात की,
बातें वो तेरे रूठ जाने की, और बातें तेरे दीदार की।

सब कुछ मुझे रुला रही थी,
मानो जैसे जख्म पे नमक लगा सी रही थी।

रोते रोते मैं सहम सा गया था,
रास्ते पे जैसे मैं भटक सा गया था।

वो गलियाँ जहाँ हम साथ घूमा करते थे,
हँसते और खूब हँसाया करते थे।

आज मानो सुनसान सी लग रही,
जैसे तेरे बिना मेरी जिंदगी वीरान सी लग रही।

आँखें नम और दिल में एक तन्हाई लिए,
चलते चलते मैं कहीं रुक सा गया था,
आज तुम्हारे शहर गया था।

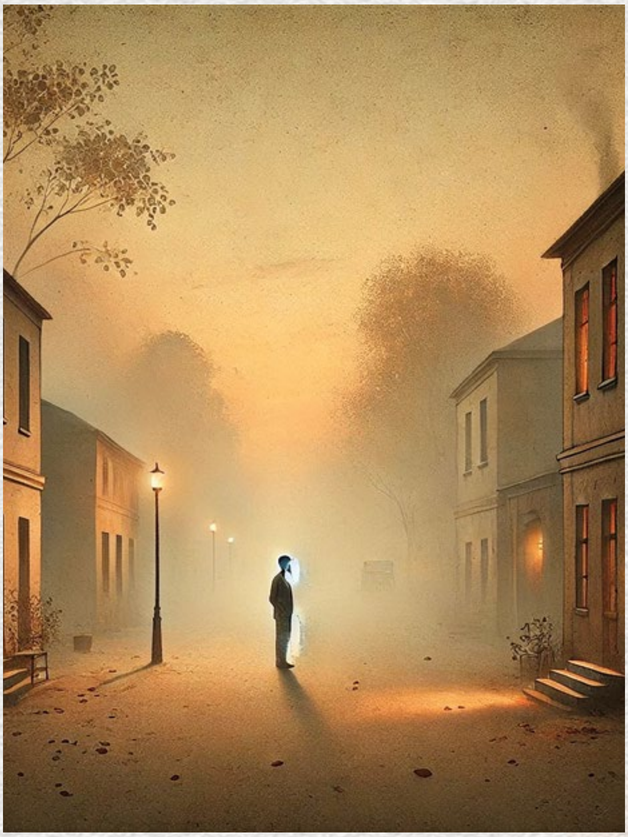

मैं प्रयास कर रहा हूं !

मोहम्मद हसीन
कनिष्ठ अभियंता (सिविल), परियोजना विभाग

मैं प्रयास कर रहा हूं !
धीरे धीरे ही सही पर आगे बढ़ रहा हूं !

मैने कठिन परिस्थितियों में भी रुकना नहीं सीखा
समय विपरीत होने पर भी झुकना नहीं सीखा !
मेहनत के पंख से पर्वत पर चढ़ रहा हूं,
धीरे धीरे ही सही पर आगे बढ़ रहा हूं !!

मन भी विचलित होता है, लोग जब ताने सुनाते हैं
संघर्ष का समय है अभी राह में पत्थर आते हैं !
मैं उन्ही पत्थरों को कलम के हथियार से गढ़ रहा हूँ !
धीरे धीरे ही सही पर आगे बढ़ रहा हूं !!

मौन मेरा साथी होगा, जब तक संघर्ष का समय है
मैं हार नही मानूंगा तो मेरा विजय होना तय है!
मैं अपनी असफलताओं पर सबकी बातें सह रहा हूँ,
धीरे धीरे ही सही पर आगे बढ़ रहा हूं!
मैं प्रयास कर रहा हूं !

भारतीय संस्कृति

शलिन सशिधरन नायर
प्रशासनिक अधिकारी - जन-सम्पर्क एवं प्रशासन

भारत की भूमि, शाश्वत सनातन,
संस्कृति की धारा, अजर अमर।
वेदों का ज्ञान, उपनिषदों की गाथा,
गीता का संदेश, सत्य का पथ।
योग की भूमि, ध्यान की धारा,
आत्मा का मर्म, मन का सहारा।
सत्य और अहिंसा की जीवनशैली,
गुरुकुलों की शिक्षा, मानवता की प्याली।
अजंता और एलोरा की चित्रकारी,
ताजमहल की शान, काव्य की तारी।
भरतनाट्यम, कथक और कुचिपुड़ी,
नृत्य और संगीत की मृदुल धुनों की झड़ी।
रामायण और महाभारत की कहानियाँ,
शिव की तांडव, कृष्ण की रासलीला।
दशावतार, अष्टविनायक की पूजा,
धर्म और कर्म की संगमधारा।
होलिका की होली, दीवाली का दीप,
रंगों की होली, प्रेम का संदेश।
मकर संक्रांति, रक्षाबंधन का बंधन,
त्योहारों की श्रृंखला, उत्सव का जीवन।
ऋषि-मुनियों का तप, संतों का प्रवचन,
ज्ञान की धरोहर, संस्कृति की सराहना।
प्रकृति का सम्मान, जीवन का संयम,
भारतीय संस्कृति, अमर और अचंल।
आओ मिलकर, इस संस्कृति का गुणगान करें,
विश्व को इसकी महानता का परिचय दें।
हम हैं भारतीय, गर्व से कहें,
संस्कृति हमारी, सदा जीवित रहे।

मंजिलें

मानसी गुप्ता
एम.बी.ए. 09 बैच

उम्मीद मंजिल की, हर जद्दोजहद लगाए बैठा है,
पीछे न मुड़ने के वादे, हर कोई खुद से कर बैठा है।
जिनकी हैं नज़रें, उस ऊंचाई पे,
जहां खुदा, हमारी असल खुशियां लेकर बैठा है।

किस्मत को भूल के, कर्म पे विश्वास करना सीखा है,
पता चला है कि यही जिंदगी जीने का असल सलीका है।
बस खुदा पे विश्वास रखना,
यही हर मुश्किल में बने रहने का तरीका है।

वो ख्वाहिशें, वो ख्वाब, पूरे करने के लिए हम मेहनत करते हैं,
रोकर भी, हर रोज़ खुद को उठाया करते हैं।
सीख गए हैं, और सीख रहे हैं,
कि मनपसंद से ज़्यादा, सही चीजें चुना करते हैं।

ये सफर भी अब यादगार बनता जा रहा है,
"कुछ पाने के लिए, कुछ खोना", अब सही लगता जा रहा है।
शिकवा नहीं रहती अब किसी से,
लगता है मेरा रब मुझे, मेरी मंजिल पे ले जा रहा है।
मेरा रब मुझे, मेरी मंजिल पे ले जा रहा है।

एक बात लिखूं

स्वागाटो
एम.बी.ए. 09 बैच

सोचूँ फिर एक बात लिखूं,
जज़्बात लिखूं या हालात लिखूं।

तेरे इश्क को अपने साथ लिखूं,
या मेरे हाथों में तेरा हाथ लिखूं।

तुझे देखूँ फिर तेरी बात लिखूं,
तारीफ लिखूं या फ़रियाद लिखूं।

तेरे पीछे खुद को आबाद लिखूं,
या तन्हाई में खुद को बर्बाद लिखूं।

तुझे दिन या खुद को रात लिखूं,
बता आज कौनसी बात लिखूं।

मैं हिन्दी भाषा हूँ।

विजय अनंत कांबले
प्रशासनिक अधिकारी - प्रशासन

मैं हिन्दी भाषा हूँ। "एकता की आशा हूँ मैं।
मैं सभी राज्यों को जोड़ती हूँ। सभी राज्यों में पढ़ाई जाती हूँ।
मेरा जन्म पुराना है। उद्देश्य सभी को साथ लेके चलना है।
मैं समझने में आसान हूँ। इसलिए मैं सबसे मनभावन हूँ।
मैं हिन्दी भाषा हूँ। "एकता की आशा हूँ।
बरसो से मुझमें बदलाव होते गए। नए शब्दार्थ मुझमे समाते गए।
हर कोई चाहे मुझको पढ़ना। हर शहर में है मेरा अपना।
संविधान की मुझे है मान्यता। न कोई समझ ले मुझे अन्यथा।
मैं हिन्दी भाषा हूँ। "एकता की आशा हूँ।
मैं सभी भाषाओं का सम्मान करती हूँ। और सबको समान रूप से अपनाती हूँ।
मैं हर व्यवहार में आती हूँ। हर जगह मै अपनाई जाती हूँ।
मेरी है सबसे बस ये अभिलाषा। सब जन सीखे हिन्दी भाषा।
मैं राष्ट्र की भाषा हूँ। "कामकाज हिंदी में कराती हूँ।
मैं हिन्दी भाषा हूँ। देशवासियों की आशा हूँ।

जहाँ सब बोल जाते हैं

मोहम्मद हसीन
कनिष्ठ अभियंता (सिविल), परियोजना विभाग

कहाँ पर बोलने की जरूरत है
और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना जरूरी है
वहाँ लब खोल जाते हैं।

नयी उम्र के ये नौजवान बच्चे
दुनियां भर की सुनते हैं।
मगर माँ बाप कुछ कहदे
तो ये मुंह खोल जाते हैं।

बनाते फिरते हैं रिश्ते
दुनियां भर से हम अक्सर।
मगर जब घर में हो जरूरत
तो हम रिश्ते भूल जाते हैं।

शहादत हो जब सीमा पर
तो हम खामोश रहते हैं।
कट जाए एक सीन पिक्चर का
तो सारे बोल जाते हैं।

ऊँची—ऊँची दुकानों में
कटाते जेब हम अपनी।
गरीबों को पड़े देना
तो सिक्के बोल जाते हैं।

अगर मखमल करे गलती
तो कोई कुछ नहीं कहता।
फटी चादर की गलती हो
तो सारे बोल जाते हैं।

हवाओं की तबाही को
सभी चुपचाप सहते हैं।
चराग़ों से हुई गलती
तो सारे बोल जाते हैं।

कहाँ पर बोलने की जरूरत है
और कहाँ पर बोल जाते हैं।
जहाँ खामोश रहना जरूरी है
वहाँ लब खोल जाते हैं।

राजभाषा विभाग: कार्य और उपलब्धियाँ

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने 10 जुलाई 2024 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। श्री जगीश राम पुरी, निदेशक राजभाषा, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार मुख्य अतिथि थे।

जुलाई 2024 : भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू ने रणनीतिक चर्चा के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी की।

हिंदी पत्रिका त्रिकुटा का तीसरा अंक 15 अगस्त 2024 को लॉन्च किया गया।

20.08.2024: भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू, राजभाषा समिति ने डॉ. मनमोहन वैद्य (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी समिति के सदस्य) को "भारतीयता की भारतीय अवधारणा" विषय पर विशेष अतिथि व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया।

भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू को भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट क्रियान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति, जम्मू द्वारा अर्धवार्षिक बैठक में सम्मानित किया गया।

24 सितंबर 2024 को भारतीय प्रबंधन संस्थान, जम्मू में हिंदी पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत एक ऑनलाइन विशेष हिंदी व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजीव कुमार रावत, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर मुख्य वक्ता थे।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू में हिंदी पखवाड़ा 2024 समारोह की झलकियाँ।

भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू
Indian Institute of Management Jammu

जगती, जम्मू-181221, भारत
Jagti, Jammu-181221, India
ई-मेल: | **E-mail: info@iimj.ac.in**
फ़ोन नंबर: | **Phone No.: 0191-2741400**

IIM JAMMU
सा विद्या या विमुक्तये

cygnusadvertising.in